डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'टैगोर और राष्ट्रवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन

टैगोर का राष्ट्रवाद मानवता केंद्रित था – उदयनारायण सिंह

नई दिल्ली। 9 मई 2022; साहित्य अकादेमी द्वारा आज गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर 'टैगोर और राष्ट्रवाद' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात मैथिली लेखक और अनुवादक उदयनारायण सिंह ने दिया। इस परिसंवाद के अन्य वक्तागण थे – देवेंद्र चौबे, मौसमी मुखर्जी, रणजीत साहा, रेखा सेठी एवं एस.पी. गांगुली। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उदयनारायण सिंह ने टैगोर द्वारा लिखित 'गोरा' उपन्यास की जरिए यह बताया कि वह अपने इस उपन्यास में बंगाल विभाजन के बाद राष्ट्र की भारतीय परिभाषा की बुनियाद रखते हैं। वे इसे राजनीतिक रूप में नहीं बल्कि सामाजिक रूप में देखते हैं और टैगोर के राष्ट्रवाद को मानवता केंद्रित मानते हैं। उन्होंने उनके एक अन्य उपन्यास 'चार अध्याय' में भी इसकी परिभाषा परिलक्षित होने का संकेत दिया। देवेंद्र चौबे ने बताया कि सामान्यतः राष्ट्रीयता का उदय 1857 के विद्रोह से माना जाता है और उसका सीधा टकराव ब्रिटिश साम्राज्यवाद से था। लेकिन कवि गुरुदेव का राष्ट्रवाद बंगाल विभाजन के दौरान लिखे गए गीतों जिनमें वह बंगाल की धरती के पाँचो तत्वों को दार्शनिक रूप में प्रस्तुत करते हैं, सामने आता है। टैगोर का राष्ट्रवाद अपने चिंतन में पश्चिम से कुछ नहीं लेता बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनता उसकी बुनियाद है। मौसमी मुखर्जी ने कहा कि 'नेशन' शब्द भारत के विचारों की परिभाषा में समाहित नहीं होता। प्रोफेसर रणजीत साहा ने टैगोर की पुस्तक राष्ट्रवाद का पूरा ब्यौरा देते हुए कहा कि टैगोर की नजर में राष्ट्रवाद एक यांत्रिक संयोजन था जो भौतिक सत्ता को प्रतिस्थापित करता है और कहीं न कहीं साम्राज्यावाद का पर्याय बनता है। जबकि भारत के लिए राष्ट्र के रूप में वे मानवता के दर्शन को प्रमुख मानते थे। रेखा सेठी ने स्पष्ट किया कि टैगोर का राष्ट्रवाद भारतीयता के गुणसूत्र, सहिष्णुता का प्रतीक था। एस.पी. गांगुली ने भी उनके राष्ट्रवाद को भारतीयता से प्रेरित बताया।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्रम् प्रदान करके किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि रवींद्रनाथ टैगोर का राष्ट्रवाद भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दार्शनिकता से आया था। कार्यक्रम में अनेक वरिष्ठ लेखक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

के. श्रीनिवासराव

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in